اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत एतिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद कर के एतिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, एतिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिए ! मस्जिद तअ़ल्लि में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर एतिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िम्मन जाइज़ हो जाएंगी । एतिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो एतिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (यानी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ عِنْدَ قَبْرِیْ وُكِّلَ بِهَا مَلَكٌ يُبَلِّغُنِیْ، وَكُفِیَ بِهَا اَمْرَ دُنْيَاهُ وَاٰخِرَتِهٖ، وَكُنْتُ لَهٗ شَهِيْدًا اَوْ شَفِيْعًا

मश्हूर सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मेरी क़ब्र के पास मुझ पर सलाम अ़र्ज़ करे, **अल्लाह** पाक उस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाएगा जो मुझ तक उस का

सलाम भी पहुंचाएगा और उस की दुन्या व आख़िरत के कामों की किफ़ायत भी करेगा और इस के साथ साथ मैं उस का गवाह हूंगा (या येह फ़रमाया कि) मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बयान सुनने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''اَفْضَلُ الْعَمَلِ اَلنِّيَّةُ الصَّادِقَةُ'' सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।[2]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर काम से पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आ़दत बनाइए कि अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है। बयान सुनने से पेहले भी अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिए। मसलन निय्यत कीजिए : ❖ इ़ल्म सीखने के लिए पूरा बयान सुनूंगा। ❖ बा अदब बैठूंगा। ❖ दौराने बयान सुस्ती से बचूंगा। ❖ अपनी इस्लाह़ के लिए बयान सुनूंगा। ❖ जो सुनूंगा, दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इन्सान को वोही कुछ मिलेगा जो आगे भेजा होगा

एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के साथ किसी सफ़र के लिए रवाना हुवे। (पेहले दौर में ऊंट और घोड़ों वग़ैरा पर सफ़र होता था और ख़ादिमों के ज़रीए ख़ैमे और ज़रूरत का सामान पेहले से मन्ज़िल पर पहुंचा दिया जाता था ताकि वहां पहुंचने तक ख़ैमे तय्यार हों)। चुनान्चे, ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल

---

1 ...شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی، جلد: ۲، صفحہ: ۲۱۸، حدیث: ۱۵۸۳ ملتقطاً

2 ...جامع صغیر، صفحہ: ۸۱، حدیث: ۱۲۸۴

मलिक और दीगर लोगों ने अपने ख़ैमे आगे भिजवा दिए मगर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपना सामान और ख़ैमा पेहले से आगे न भिजवाया । जब मन्ज़िल पर पहुंचे, तो हर शख़्स अपने ख़ैमे में चला गया लेकिन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहीं नज़र नहीं आ रहे थे । ख़लीफ़ा ने ख़ादिमों से कहा : जाओ ! उन्हें तलाश करो । तलाश किया गया, तो आप इस ह़ाल में मिले कि एक दरख़्त के नीचे बैठे ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं । ख़लीफ़ा को इत्तिलाअ़ दी गई, उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को बुला कर पूछा : ऐ अबू ह़फ़्स (उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़) ! आप क्यूं रो रहे हैं ? ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़िक्रे आख़िरत में डूबा हुवा सबक़ आमोज़ जवाब दिया, फ़रमाया : मुझे क़ियामत का दिन याद आ गया । देखिए ! (आप सब ने ख़ैमे पेहले से भेजे थे, आप आते ही अपने अपने ख़ैमे में चले गए मगर) मैं ने घर से कोई चीज़ आगे नहीं भेजी थी, इस लिए मुझे यहां कुछ नहीं मिला । क़ियामत में भी येही ह़ाल होगा, जिस ने जो कुछ आगे भेजा होगा, उसे वोही कुछ मिलेगा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही !

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वाक़ेई ह़क़ीक़त येह है, येह दुन्या हमारा मुस्तक़िल ठिकाना नहीं, दुन्या आख़िरत की खेती है, यहां हम जो बोएंगे, वोही आख़िरत में काटेंगे । आह ! अ़न क़रीब वोह वक़्त बस आने ही वाला है जब ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाएंगे, हम लाख चारह जूई करें, हाथ पैर मारें, कुछ भी करें, वोह हमारी रूह़ क़ब्ज़ कर लेंगे । आह ! फिर जल्द हमें अंधेरी क़ब्र में तन्हा डाल दिया जाएगा, न कोई साथी, न पुरसाने ह़ाल ! घुप

1 ...سیرۃ عمر بن عبد العزیز لابن عبد الحکم، صفحہ: ۲۷

अंधेरी क़ब्र में क़ियामत तक तन्हा रेहना होगा फिर क़ियामत का वोह हौलनाक मन्ज़र ! तांबे की दहकती हुई ज़मीन, आग बरसाता सूरज, लोग अपने ही पसीने में डूब रहे होंगे, प्यास की शिद्दत से ज़बान लटक कर सीने पर आ रही होगी, कलेजा मुंह को आ रहा होगा फिर हमारा आमाल नामा हमारे हाथ में थमा दिया जाएगा, सामना क़हर का होगा, आह ! उस वक़्त सब किया धरा सामने आ जाएगा ।

ऐ आ़शिकाने रसूल ! ज़रा तसव्वुर तो बांधिए ! उस वक़्त आमाल नामा नेकियों से ख़ाली देख कर कितनी ह़सरत होगी ! रेह रेह कर ख़याल आ रहा होगा : हाए ! हाए ! मैं ने तो ज़िन्दगी खेलों में गुज़ार दी, आख़िरत के लिए तो कुछ जम्अ़ ही न किया, मुझे फ़िक्र थी तो माल कमाने की, नेकियां कमाने की तो फ़ुरसत ही न मिली, मुझे कारें ख़रीदने, कोठियां बनाने की तो फ़िक्र थी, जन्नत में मह़ल बनवाने की तो कभी फ़िक्र ही न की । आह ! सोशल मीडिया, फ़ेसबुक, यू टयूब वग़ैरा पर गुनाहों भरे काम करने के लिए तो बहुत वक़्त था, नमाज़ व तिलावत और नेक आमाल के लिए कभी फ़ुरसत ही न मिली । ऑफ़िस जाने के लिए तो आंख खुल जाती थी, नमाज़े फ़ज्र के लिए उठने की तौफ़ीक़ नहीं होती थी । आह ! ज़िन्दगी बस दुन्या की आ़रज़ी, फ़ानी, चन्द रोज़ा मुस्तक़्बिल बनाने की फ़िक्र ही में कट गई, आख़िरत भी आनी है, रब्बे करीम के हुज़ूर ह़ाज़िरी भी होनी है, ज़िन्दगी के एक एक अ़मल का जवाब देह भी होना है, इस बारे में तो कभी सोचा ही नहीं था । हां ! क़ब्रिस्तान से गुज़र होता था मगर दिल में ग़फ़्लत जमाए, सर झुका कर चुप चाप गुज़र जाया करता था, जनाज़ों में शिर्कत के मवाक़ेअ़ भी मिलते थे मगर उन से इ़ब्रत कभी नहीं ली थी, गली, मह़ल्ले में, अपने दोस्त अह़बाब, अ़ज़ीज़ रिश्तेदारों बल्कि अपने घर से भी जनाज़े उठते देखा था मगर **मैं ने भी मरना है** इस का तो कभी ख़याल ही नहीं अयाा था । आह ! ज़िन्दगी ग़फ़्लत में

गुज़ार दी, अब आमाल नामा ख़ाली है । काश ! मैं ने दुन्या में फ़िक्र कर ली होती, काश ! नेक आमाल किए होते, काश ! नमाज़ें पढ़ी होतीं, काश ! काश ! सद करोड़ काश ! सुनिए ! क़ुरआने करीम क्या केह रहा है :

يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿۲۴﴾

(پارہ:۳۰،سورۂ فجر:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हाए ! किसी त़रह़ मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिए तो सही ! रोज़े क़ियामत अगर ऐसा हो गया, तो क्या बनेगा ? अभी वक़्त है, आज आख़िरत की फ़िक्र कर लें, आज क़ब्र जगमगाने की फ़िक्र कर लें, क़ब्र में, ह़श्र में, पुल सिरात़ पर काम्याबी पाने के लिए **अल्लाह** पाक के हुज़ूर झुक जाएं, रो रो कर तौबा कर लें, गुनाह छोड़ कर **अल्लाह** पाक की रिज़ा वाले काम करने में मसरूफ़ हो जाएं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ मत दीजिए !

पारह 25, सूरए शूरा, आयत 20 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾

(پارہ:۲۵،سورۂ شوریٰ:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे, हम उस के लिए उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे, हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं ।

सह़ाबिए रसूल, सुल्त़ानुल मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : जो बन्दा दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ दे (मसलन दुन्यवी मुस्तक़्बिल की फ़िक्र तो करे मगर आख़िरत में

काम्याबी की फ़िक्र न करे) उस के लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं, हां ! उस के लिए जहन्नम है। साथ ही साथ येह वबाल भी कि (दुन्यवी मुस्तक़्बिल के लिए) उस की फ़िक्रों का कुछ नतीजा न निकलेगा, उसे दुन्या में सिर्फ़ वोही कुछ दिया जाएगा जो पेहले से लिखा जा चुका है।[1]

दुन्यवी फ़िक्रें छोड़ो ! आख़िरत के लिए फ़ारिग़ हो जाओ !

सहाबिए रसूल, हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पारह 25, सूरए शूरा की येह आयत तिलावत फ़रमाई :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖۚ (پارہ: ۲۵، سورۂ شوریٰ: ۲۰)

तर्मजए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे, हम उस के लिए उस की खेती बढ़ाएं।

फिर फ़रमाया : **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम ! (दुन्यवी फ़िक्रें छोड़ कर) इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जाओ ! तुम्हारे सीने को मालदारी से भर दिया जाएगा और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे (मसलन दुन्यवी फ़िक्रों में लगे रहोगे, सिर्फ़ दुन्यवी मुस्तक़्बिल का ही सोचते रहोगे), तो तुम्हारे दिल को मसरूफ़िय्यात (मसलन दुन्यवी मश्ग़ूलियात) से भर दिया जाएगा।[2]

दुन्यवी फ़िक्रों में रेहना हलाकत का सबब है

सहाबिए रसूल, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपनी तमाम फ़िक्रों को सिर्फ़ एक फ़िक्र यानी फ़िक्रे आख़िरत बना दिया, तो **अल्लाह**

1 ...تفسیر درِّ منثور، پارہ: ۲۵، سورۂ شوریٰ، زیرِ آیت: ۲۰، جلد: ۷، صفحہ: ۳۴۳

2 ...ابنِ ماجہ، کتاب: الزہد، صفحہ: ۶۶۸، حدیث: ۴۱۰۷ ملتقطًا

पाक उसे उस की दुन्या की फ़िक्र के लिए काफ़ी है और जिस की फ़िक्रें दुन्या के अह़वाल में मश्ग़ूल रहें, तो **अल्लाह** पाक को उस की परवाह नहीं होगी कि वोह किस वादी में हलाक हो रहा है।[1]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ौर का मक़ाम है ! हम ने खाना कहां से है ? पेहनना क्या है ? सुब्ह़ का तो खा लिया, शाम का कहां से आएगा ? मुस्तक़्बिल कैसा होगा ? बुढ़ापा कैसे गुज़ेरेगा ? बच्चों का मुस्तक़्बिल कैसा होगा ? एक कारोबार तो चल पड़ा है, अब दूसरा कैसे चलेगा ? एक जगह से अच्छी आमदन हो रही है, आमदन के मज़ीद ज़राएअ़ कैसे खोले जाएं ? कार, कोठी, बंगला कैसे मिलेगा ? काश ! मैं रातों रात अमीर हो जाऊं वग़ैरा वग़ैरा हज़ार क़िस्म की फ़िक्रें हम दिल में पाल कर रखते हैं, इन्ही फ़िक्रों में सुब्ह़ होती है, इन्ही फ़िक्रों में रात होती है और ज़िन्दगी यूं ही तमाम होती है। हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे हैं : जो बन्दा ऐसी फ़िक्रें छोड़ दे, सिर्फ़ एक फ़िक्र, फ़िक्रे आख़िरत अपना ले कि मैं ने क़ब्र में, ह़श्र में, पुल सिरात़ पर काम्याबी ह़ासिल करनी है, जन्नत में जाना है, **अल्लाह** पाक को राज़ी करना है, कैसे कर पाऊंगा ? येह एक फ़िक्र अपना ले, **अल्लाह** पाक उस की सारी फ़िक्रों के लिए काफ़ी हो जाएगा और जो बन्दा येह एक फ़िक्र न अपनाए बल्कि दुन्यवी फ़िक्रों ही में पड़ा रहे, **अल्लाह** पाक को कुछ परवा नहीं कि वोह किस वादी में हलाक होता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आख़िरत के चाहने वाले बनो !

मसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : लोगो ! आख़िरत आ रही है, दुन्या जा रही है, इन में से

1 ... ابنِ ماجہ، کتاب: الزہد، صفحہ: ۶۶۸، حدیث: ۴۱۰۶

हर एक के चाहने वाले हैं । तुम आख़िरत के चाहने वाले बनो ! दुन्या के चाहने वाले मत बनना ! बेशक आज अ़मल का दिन है, आज हिसाब नहीं मगर कल हिसाब का दिन होगा, वहां अ़मल नहीं ।[1]

अहले तक़्वा का एक वस्फ़

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! फ़िक्रे आख़िरत ज़रूरी है । पारह 1, सूरए बक़रह की इब्तिदा ही में **अल्लाह** पाक ने अहले तक़्वा के 5 औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए फिर फ़रमाया :

اُولٰٓىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (پارہ:۱،سورۂ بقرہ:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही मुराद को पहुंचने वाले ।

यानी जिन में येह 5 औसाफ़ हैं, वोही अपने रब्बे करीम की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और येही अस्ल में काम्याब हैं । येह 5 औसाफ़ कौन कौन से हैं ? येह जानने के लिए **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** से सूरए बक़रह के पेहले रुकूअ़ की तफ़्सीर पढ़ लीजिए, इन में एक वस्फ़ येह है, **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया :

وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ (پارہ:۱،سورۂ بقرہ:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आख़िरत पर यक़ीन रखें ।

मालूम हुवा : जो तक़्वा वाले हैं, वोह आख़िरत पर ईक़ान रखते हैं । ईक़ान का माना है : पुख़्ता तरीन यक़ीन, जिस में ज़र्रा बराबर भी शको शुबा न हो । जब किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ इतना पुख़्ता यक़ीन हो जाए, तो वोह दिल और दिमाग़ पर छा जाती है, इन्सान उस के ख़िलाफ़ कुछ सोचता ही नहीं है ।

---

1 ... بخاری، کتاب: الرقاق، باب: فی الامل وطولہ، صفحہ: ۱۵۸۱

हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और फ़िक्रे आख़िरत

अपने वक़्त के बहुत बड़े इमाम, वलिय्ये कामिल हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अहले तक़्वा में से हैं। अल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ❖ इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब तशरीफ़ लाते, तो यूं लगता जैसे किसी क़रीबी दोस्त की तदफ़ीन से वापस आए हैं। ❖ आप ऐसे रेहते जैसे आग आप के सर पर लटक रही है। ❖ ऐसे बैठते जैसे कोई क़ैदी है और अभी उस की गरदन मार दी जाएगी। ❖ सुब्ह इस हाल में करते कि जैसे अभी क़ियामत की हौलनाकियों से गुज़र कर आए हैं। ❖ एक मरतबा किसी ने आप से हाल पूछा, तो फ़रमाया : बीच समुन्दर में जिस की किश्ती टूट जाए, वोह भी मुझ से बेहतर हालत में होगा। पूछा : ऐसा क्यूं ? फ़रमाया : मैं गुनहगार बन्दा हूं और जो कुछ नेकियां कर पाया हूं, वोह क़बूल हुई या मेरे मुंह पर मार दी जाएंगी, मैं नहीं जानता।[1]

हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और फ़िक्रे आख़िरत

❖ हज़रते सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस में गुफ़्तगू का सिलसिला जारी था मगर आप बिल्कुल ख़ामोश बैठे थे। पूछा गया : हुज़ूर ! क्या बात है, आप ख़ामोश क्यूं हैं ? फ़रमाया : मैं अहले जन्नत के बारे में सोच रहा हूं कि वोह किस त़रह़ ख़ुशी ख़ुशी एक दूसरे से मुलाक़ात किया करेंगे ! मगर दोज़ख़ी लोग एक दूसरे को बे क़रारी से मदद के लिए पुकारा करेंगे। इतना केहने के बाद आप रोने लगे।[2] ❖ हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक

1...आदाबे हसन बसरी, सफ़ह़ा : 25, 26, 27 मुल्तक़त़न

2...سیرۃ و مناقب عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، صفحہ: ۲۱۴

मरतबा रोने लगे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को रोता देख कर आप की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا भी रोने लगीं, बाद में दीगर घरवाले भी रोने लगे । जब रोने का सिलसिला थमा, तो अ़र्ज़ की गई : ऐ अमीरल मोमिनीन ! आप क्यूं रो रहे थे ? फ़रमाया : मुझे बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होना याद आ गया था, जिस के बाद कोई जन्नत में जाएगा, तो कोई दोज़ख़ में । येह केह कर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चीख़ मारी और बेहोश हो गए ।[1]

❖ ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक ग़ुलाम का बयान है : मैं रात के वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर रेहता था, अक्सर अवक़ात आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते रेहते थे, एक रात आप मामूल से ज़ियादा रोए । जब सुब्ह़ हुई, तो मैं ने अ़र्ज़ किया : आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! आज रात तो आप ऐसा रोए कि पेहले कभी नहीं रोए । फ़रमाया : मुझे बारगाहे इलाही में खड़े होने का मन्ज़र याद आ गया था । इतना केहने के बाद आप पर बेहोशी त़ारी हो गई और काफ़ी देर के बाद होश में आए, इस के बाद मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को कभी मुस्कुराते नहीं देखा ।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इसे केहते हैं : **''ईक़ाने आख़िरत''** । यानी आख़िरत पर ऐसा पुख़्ता यक़ीन कि शको शुबा की बिल्कुल कोई गुन्जाइश न बचे, फ़िक्रे आख़िरत दिलो दिमाग़ पर छा जाए । आख़िरत पर ऐसा पुख़्ता यक़ीन, ऐसा ईक़ान मत़लूब है, येह अहले तक़्वा का वस्फ़ है । यक़ीन मानिए ! अगर हमें भी ऐसा पुख़्ता यक़ीन नसीब हो जाए, तो दुन्या की सारी फ़िक्रें मिट जाएं, हमारा किरदार भी संवर जाए, अख़्लाक़ भी संवर जाएं, हमारे आमाल भी नेक हो जाएं, गुनाहों की आ़दात भी छूट जाएं और हम सह़ीह़ मानों में नेक मुसलमान बनने में काम्याब हो जाएंगे ।

---

1 ...حِلْیَۃُ الاولیا، جلد: ۵، صفحہ: ۳۰۳، رقم: ۷۲۰۱

2 ...سیرۃ و مناقب عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، صفحہ: ۲۱۶

फ़िक्रे आख़िरत न होने के बाज़ अस्बाब

मगर अफ़्सोस ! ❖ दुन्या की महब्बत ❖ मालो दौलत की हिर्स ❖ फ़ुज़ूलियात में मश्ग़ूलिय्यत ❖ इज़्ज़त व शोहरत और मन्सब की हवस ❖ गुनाहों की कसरत ❖ और लम्बी उम्मीदों ने हमें ग़ाफ़िल कर दिया है, दिल पर ग़फ़्लत के पर्दे पड़े हैं और हम फ़िक्रे आख़िरत से कोसों दूर, बस दुन्यवी मुस्तक़्बिल चमकाने की फ़िक्र में दिन रात गुज़ारे चले जा रहे हैं।

❖ हम यक़ीन से जानते हैं कि एक दिन मरना है मगर हम मौत की तय्यारी नहीं करते। ❖ हम जानते हैं कि क़ब्र में उतरना है मगर हमें क़ब्र के अंधेरे, तन्हाई और वहशत की फ़िक्र नहीं होती। ❖ हम मुसलमान हैं, हमें यक़ीन है कि रोज़े क़ियामत मुर्दों को उठाया जाएगा। ❖ हमें मालूम है कि क़ियामत का दिन सख़्त हौलनाक दिन है। ❖ आह ! वोह दहकती हुई ज़मीन ❖ आग बरसाता सूरज ❖ हाए ! हाए ! वोह जहन्नम की हौलनाकियां ❖ आह ! अंधेरे में डूबा हुवा, बाल से बारीक, तलवार की धार से तेज़ पुल सिरात़ ❖ हां ! वोह मीज़ाने अ़मल जिस पर रोज़े क़ियामत आमाल तोले जाएंगे। ❖ आह ! हमारा नामए आमाल, जिस में हर छोटा बड़ा अ़मल दर्ज होगा। ❖ रोज़े क़ियामत मख़्लूक़ के सामने हमारा आमाल नामा खोल दिया जाएगा। ❖ रब्बे जब्बार व क़हहार की बारगाह में हाज़िरी होगी। ❖ एक एक नेमत, हर हर अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। हम येह सब बातें जानते हैं, मानते हैं, इन पर यक़ीन भी रखते हैं मगर अफ़्सोस ! हमें फ़िक्र नहीं होती ❖ हम दुन्या में ऐसे खो गए जैसे कभी मरना ही नहीं ❖ फ़िक्रे आख़िरत से दिल ख़ाली हैं। ❖ ख़ौफ़े ख़ुदा ❖ ख़ौफ़े क़ब्र ❖ ख़ौफ़े आख़िरत कुछ भी नहीं। ❖ बस दुन्या की रंगीनियों में मस्त ❖ एक आ़रज़ी बल्कि जिस के आने का यक़ीन भी नहीं, ऐसे मुस्तक़्बिल की फ़िक्र में दिन रात गुज़ारते चले जा रहे हैं। आह ! येह ग़फ़्लत !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मौत आ कर ही रहेगी याद रख !

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हम जागें या सोएं, हंसें या रोएं, ग़ाफ़िल रहें या बेदार हो जाएं, मौत तो बहर हाल आनी ही आनी है, जान जानी ही जानी है, हमें इस दुन्या से निकल कर आख़िरत की त़रफ़ सफ़र करना ही पड़ेगा । **अल्लाह** पाक कुरआने करीम में फ़रमाता है :

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۠(۸)

(پارہ:۲۸،سورۂ جمعہ:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो, वोह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है फिर उस की त़रफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम ने किया था ।

दुन्या में ऐसे रहो जैसे मुसाफ़िर !

सहाबी इब्ने सहाबी, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन मुझे (कन्धे से) पकड़ कर फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ! दुन्या में ऐसे रहो जैसे अजनबी हो या ऐसे जैसे मुसाफ़िर हो और अपने आप को मुर्दों में शुमार किया करो ! ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने मुझे फ़रमाया : ऐ मुजाहिद ! सुब्ह़ करो, तो शाम के मुतअ़ल्लिक़ मत सोचा करो ! शाम हो जाए, तो सुब्ह़ के मुतअ़ल्लिक़ मत सोचा करो ! ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! बेशक तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा नाम क्या होगा ? (यानी तुम्हें ज़िन्दों में शुमार किया जाएगा या मुर्दों में)[1]

1...مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب: الزہد، جلد:۸، صفحہ:۱۲۴، حدیث:۳

सीरते मुस्तफ़ा का एक हसीन पहलू

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! हमें दुन्यवी मुस्तक़्बिल की फ़िक्र तो सताती रेहती है मगर आख़िरत की फ़िक्र नहीं सताती । आह ! कहां का मुस्तक़्बिल ? मुस्तक़्बिल तो दूर की बात, कल किस ने देखा है ? बल्कि हक़ीक़त तो येह है कि हमें अगली सांस का भी इल्म नहीं, न जाने आएगी या नहीं । सहाबिए रसूल, हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा सहाबी इब्ने सहाबी, हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने एक माह के उधार पर कोई चीज़ ख़रीदी । इस पर **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तम्बीह करते हुवे फ़रमाया : क्या तुम्हें उसामा पर तअ़ज्जुब नहीं ! येह एक माह के उधार पर चीज़ ख़रीद रहे हैं, उसामा ने लम्बी उम्मीद लगा ली है । उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! मैं अपनी आंख खोलता हूं, तो गुमान होता है कि दोबारा आंख बन्द करने से पेहले मेरी रूह क़ब्ज़ कर ली जाएगी, जब मैं कोई लुक्मा मुंह में डालता हूं, तो गुमान होता है कि इसे चबा न पाऊंगा, इस से पेहले मौत आ जाएगी फिर फ़रमाया : ऐ औलादे आदम ! अगर अक़्ल रखते हो, तो ख़ुद को मुर्दों में शुमार करो ![1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सीरते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कितना हसीन पहलू है, हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौत को हर वक़्त सामने रखा करते थे, हालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वही के ज़रीए यक़ीनी तौर पर मालूम था कि अभी मौत नहीं आएगी, दीन मुकम्मल होगा फिर ही दुन्या से रुख़्सती होगी, इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौत को हमेशा सामने रखा करते थे । यक़ीनन येह हम

1 ...موسوعہ ابن ابی الدنیا، کتاب: قصر الامل، جلد: ۳، صفحہ: ۳۰۵، حدیث: ۶

गुलामों की तालीम के लिए है। ❖ वरना आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मालिके जन्नत हैं, आप शाफ़ेए महशर हैं। ❖ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से उम्मती जन्नत में जाएंगे। ❖ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ **अल्लाह** पाक ने मक़ामे महमूद का वादा फ़रमा लिया है। ❖ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या से रुख़्सती से पेहले **अल्लाह** पाक ने आप को इख़्तियार दिया कि महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या में क़ियाम चाहें, तो आप की मर्ज़ी, हमारे पास आना चाहें, तो आ जाइए। वैसे भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मौत सिर्फ़ एक आन (यानी लम्हा भर) के लिए आती है। ❖ हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़ता से अब भी अपने मज़ार मुबारक में दुन्यवी ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा हैं।

हां ! ❖ हमें अपनी मौत का इल्म नहीं है। ❖ मौत के वक़्त हमारा ईमान सलामत रेह पाएगा या नहीं ? हम नहीं जानते। ❖ मरने के बाद हमारी क़ब्र जन्नत का बाग़ बनेगी या जहन्नम का गढ़ा ? हम नहीं जानते। ❖ रोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक की रहमत नसीब होगी या नहीं ? ❖ प्यारे आक़ा, रसूले ख़ुदा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त हासिल कर पाएंगे या गुनाहों के जुर्म में जहन्नम में धकेल दिए जाएंगे ? ❖ पुल सिरात से बा सलामत गुज़र पाएंगे या नहीं ? हम नहीं जानते मगर अफ़्सोस ! हमें मौत याद नहीं रेहती।

3 हैरत नाक लोग !

सहाबिए रसूल, हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे 3 लोगों ने तअ़ज्जुब में डाल दिया और मैं उन के मुतअ़ल्लिक़ सोच कर हंसता हूं : (1) लम्बी उम्मीदें लगाने वाला जबकि मौत उसे ढूंड रही है। (2) ग़ाफ़िल जबकि उस से ग़फ़्लत नहीं बरती जा रही (यानी हम अगर्चे ग़ाफ़िल हो जाएं मगर हम से ग़फ़्लत नहीं की जा रही, हमारी कड़ी निगरानी

की जा रही है, किरामन कातिबीन यानी आमाल लिखने वाले फ़िरिश्ते एक एक अ़मल लिख रहे हैं, **अल्लाह** पाक देख रहा है, हमारे आज़ा, येह ज़मीन, सब हमारे ख़िलाफ़ गवाह तय्यार हो रहे हैं, क़ब्र हमें रोज़ाना पुकारती है, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام हुक्मे इलाही के मुन्तज़िर हैं, बस हुक्म होगा और वोह रूह़ क़ब्ज़ कर लेंगे, ग़रज़ ! जो ग़ाफ़िल है, उस से ग़फ़्लत नहीं बरती जा रही, उस की कड़ी निगरानी हो रही है) और (3) तीसरा शख़्स जिस पर ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ह़ैरत होती है, फ़रमाया : मुह़ं भर कर हंसने वाला जबकि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह** पाक उस से राज़ी है या नाराज़ ।[1] पारह 15, सूरए बनी इसराईल, आयत 18 और 19 में इरशाद होता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ (پارہ:۱۵،سورۂ بنی إسرائیل:۱۸-۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो येह जल्दी वाली चाहे, हम उसे इस में जल्द दे दें, जो चाहें जैसे चाहें फिर उस के लिए जहन्नम कर दें कि उस में जाए मज़म्मत किया हुवा, धक्के खाता और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला, तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी ।

ऐ जन्नत के त़लबगार प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ैसला हम ने ख़ुद करना है, हमें दुन्या चाहिए या आख़िरत ? अगर हम आख़िरत चाहते हैं, अगर हम आख़िरत की हमेशा रेहने वाली ज़िन्दगी में आराम व सुकून और जन्नती नेमतें चाहते हैं और यक़ीनन हर मुसलमान येही चाहेगा, तो हमें इस की तय्यारी करनी पड़ेगी, इस के लिए दुन्या से निगाहें हटा कर **अल्लाह** पाक की रिज़ा वाले काम करने ही पड़ेंगे ।

---

1 ... موسوعہ ابن ابی الدنیا، کتاب: قصر الامل، جلد: ۳، صفحہ: ۳۰۹، حدیث: ۲۹

फ़िक्रे आख़िरत कैसे मिले ?

आख़िरत की तय्यारी कैसे हो पाएगी ? फ़िक्रे आख़िरत के ज़रीए । शायद हम सब को तजरिबा होगा : हम वोही काम कर पाते हैं जिस की त़रफ़ हमारी तवज्जोह होती है, जिस काम की त़रफ़ तवज्जोह न रहे, वोह चाहे कितना ही अहम काम क्यूं न हो, हम भूल जाते हैं, याद नहीं रख पाते । इस लिए अगर आख़िरत चाहिए, आख़िरत की तय्यारी करनी है, तो फ़िक्रे आख़िरत अपनानी होगी । ❖ हम आख़िरत के अह़वाल पर ग़ौर किया करें । ❖ क़ब्र ❖ ह़श्र ❖ क़ियामत ❖ वहां की हौलनाकियां ❖ मीज़ान ❖ पुल सिरात़ ❖ जहन्नम और वहां के अ़ज़ाबात के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र किया करें । ❖ कम अज़ कम हफ़्ते में एक आध बार क़ब्रिस्तान जाएं, वहां दफ़्न शुदा मुसलमानों के लिए ईसाले सवाब करें फिर वहां बैठ कर क़ब्र, उस की तन्हाई, अंधेरे और वह़शत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करें । ❖ सोचें कि अ़न क़रीब मैं भी अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाऊंगा फिर रोज़े क़ियामत उठना होगा, बारगाहे इलाही में पेश होना होगा ! यूं आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करें ❖ रोज़ाना ज़ियादा नहीं, तो कम अज़ कम 5 मिनट ही सही, तन्हाई में बैठ कर उख़रवी मुआ़मलात पर ग़ौरो फ़िक्र करें, रोज़ाना करते रहेंगे, तो اِنْ شَآءَ الله दिल में फ़िक्रे आख़िरत बैठ जाएगी । ❖ आख़िरत की याद दिलाने वाली किताबें पढ़ें, मसलन शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कुतुबो रसाइल पढ़ें, जैसे : (1) क़ब्र की पेहली रात (2) मुर्दे के सदमे (3) बादशाहों की हड्डियां (4) क़ब्र का इम्तिह़ान (5) ग़फ़्लत (6) बुरे ख़ातिमे के अस्बाब वग़ैरा । इसी त़रह़ मक्तबतुल मदीना की बहुत सारी किताबें हैं : मसलन (1) ख़ौफ़े ख़ुदा (2) फ़िक्रे मदीनी (3) जन्नत का आसान रास्ता (4) क़ब्र में आने वाला दोस्त (6) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी वग़ैरा किताबें पढ़ें, اِنْ شَآءَ الله फ़िक्रे आख़िरत नसीब होगी ।

फ़िक्रे आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ दुआए मुस्तफ़ा

❖ फ़िक्रे आख़िरत पाने के लिए दुआ भी करें । हमारे प्यारे नबी, रसूले हाशिमी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ دُنْیَا تَمْنَعُ خَیْرَ الْاٰخِرَةِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ حَیَاةٍ تَمْنَعُ خَیْرَ الْمَمَاتِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَمَلٍ یَمْنَعُ خَیْرَ الْعَمَلِ [1]

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं ऐसी दुन्या से तेरी पनाह चाहता हूं, जो आख़िरत की भलाई से रोक दे । ऐसी ज़िन्दगी से तेरी पनाह चाहता हूं, जो अच्छी मौत से रोक दे और ऐसी उम्मीदों से तेरी पनाह चाहता हूं जो नेक आमाल से रोक दे ।

इन्सान का दिल उस के माल के साथ रेहता है

एक मरतबा एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा, अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे क्या हो गया कि मैं मौत को पसन्द नहीं करता (यानी मेरा दिल दुन्या की त़रफ़ माइल है, मैं अपने दिल में आख़िरत की त़रफ़ मैलान कम पाता हूं और मौत जो जन्नत तक पहुंचने का रास्ता है, मुझे येह मौत पसन्द नहीं) । सरकारे आ़ली वक़ार, मक्की मदनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास माल है ? अ़र्ज़ किया : जी हां ! फ़रमाया : अपना माल (आख़िरत के लिए सदक़ा व ख़ैरात कर के) आगे भेज दो क्यूंकि आदमी का दिल अपने माल के साथ होता है, अगर येह अपने माल को आगे भेज दे (यानी सदक़ा व ख़ैरात कर दे), तो उस से मिलना चाहता है और अगर माल को पीछे छोड़ दे, तो उस के साथ पीछे रेहना चाहता है ।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे आख़िरत पाने का एक त़रीक़ा अच्छी सोह़बत भी है । नेक, परहेज़गार, ख़ौफ़े ख़ुदा वाले, आख़िरत की फ़िक्र करने

---

1 ...موسوعہ ابن ابی الدنیا، کتاب: قصر الامل، جلد: ۳، صفحہ: ۳۱۲، حدیث: ۴۶

2 ...الزہد لابن المبارک، جز: ۵، صفحہ: ۲۰۸، حدیث: ۶۳۴

वाले लोगों के साथ बैठेंगे, तो اِنْ شَآءَ الله हमें भी फ़िक्रे आख़िरत नसीब हो जाएगी। अच्छी सोहबत हासिल करने के लिए दावते इस्लामी वाले आशिक़ाने रसूल के हाथ **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मामूल बनाइए, अपने शहर में होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत कीजिए, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़ता कर्दा रिसाला **नेक आमाल** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिए, **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में शिर्कत कर के फ़ैज़ाने कुरआन हासिल कीजिए। **अल्लाह** पाक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नेक अ़मल नमबर 20 की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे आख़िरत पाने, उख़रवी ज़िन्दगी की तय्यारी करने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने के लिए आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो जाइए, 12 दीनी कामों में भी ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिए, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के अ़ता कर्दा **"72 नेक आमाल"** पर अ़मल कीजिए, इस की बरकत से اِنْ شَآءَ الله पाबन्दे सुन्नत बनने, नेकियों का ज़ौक़ शौक़ पाने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिए कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। **"72 नेक आमाल"** में से **नेक अ़मल नमबर 20** येह है कि क्या आज आप ने दावते इस्लामी के दीनी कामों को अपने निगरान के दिए हुवे शिडयूल के मुताबिक़ कम अज़ कम दो घंटे दिए ? इस नेक अ़मल पर अ़मल करेंगे, तो हम दावते इस्लामी के दीनी कामों में हिस्सा लेने वाले बन जाएंगे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्र व दफ़्न के मदनी फूल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइए ! क़ब्र व दफ़्न के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं : ❖ एक क़ब्र में एक से ज़ियादा बिला ज़रूरत दफ़्न करना, जाइज़ नहीं और ज़रूरत हो, तो कर सकते हैं ।[1] ❖ जनाज़ा क़ब्र से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है, ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से क़ब्र में उतारी जाए । क़ब्र की पाइंती (यानी पाउं की जानिब वाली जगह) रख कर सर की त़रफ़ से न लाएं ।[2] ❖ ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन और बेहतर येह है कि क़वी (त़ाक़तवर) और नेक आदमी क़ब्र में उतरें । औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें, येह न हों, तो दीगर रिश्तेदार और येह भी न हों, तो परहेज़गारों से उतरवाएं ।[3] ❖ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें । ❖ क़ब्र में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें : بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه[4] ❖ मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले की त़रफ़ कर दें और कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली, तो भी ह़रज नहीं ।[5] ❖ कफ़न की गिरह खोलने वाला येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** ! हमें इस के अज्र से मह़रूम न कर और हमें इस के बाद फ़ितने में न डाल ।[6]

1…बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, स. 846, आ़लमगीरी, जि. 1, स. 166

2…बहारे शरीअ़त जि. 1, स. 844

3… عالمگیری ج ا ص ۱۶۶

4… تنویر الابصار ج ۳ ص ۱۶۶

5… عالمگیری ج ا ص ۱۶۶، جوہرہ ص ۱۴۰

6… حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح ص ۶۰۹

एलान

क़ब्र व दफ़्न के बक़िय्या मदनी फूल तरबियती हल्क़ों में बयान किए जाएंगे, लिहाज़ा इन को जानने के लिए तरबियती हल्क़ो में ज़रूर शिर्कत कीजिए।

दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ **शबे जुम्आ़ का दुरूद :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुम्आ़ (जुम्आ़ और जुमेरात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा, मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं।[1]

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पेहले और बैठा था, तो खड़े होने से पेहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे।**[2]

1...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ السادسۃ والخمسون، ص۱۵۱ ملخصًا

2...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الحادیۃ عشرۃ، ص۶۵

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :**

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है, तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं ।**(1)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिए **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ।**(2)

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बाज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है ।(3)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया, तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को ह़ैरत हुई कि **येह कौन बड़े मर्तबे वाला है !** जब वोह चला गया, तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो यूं पढ़ता है ।(4)

1...القول البدیع، الباب الثانی، ص۲۷۷

2...الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹، حدیث۳۱

3...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الثانیۃ والخمسون، ص۱۴۹

4...اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص۱۲۵

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिए **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।**[1]

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने इस दुआ को 3 मरतबा पढ़ा, तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली ।[2] दुआ येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

(यानी हिल्म और करम फ़रमाने वाले **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** पाक है, सात आसमानों और अ़ज़मत वाले अ़र्श का रब ।)

1...مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی کیفیۃ الصلاۃ...الخ، ۱۰/۲۵۴، حدیث: ۱۷۳۰۵

2...تاریخ ابن عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵